avyaan PUBLICATIONS

# उत्तर प्रदेश पुलिस

## कांस्टेबल (आरक्षी), उपनिरीक्षक (SI)

## UPSSSC एवं अन्य परीक्षाएँ

# सामान्य हिन्दी

### विगत परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न पत्रों के साथ

## Class Notes

**पुस्तक की विशेषताएँ-**

- इसमें नवीनतम पाठ्यक्रम के सभी अध्यायों को कवर किया गया है।
- इस पुस्तक में परीक्षार्थीयों को समझने के लिए सरल भाषा के साथ-साथ उदाहरण, चार्ट एवं शार्ट ट्रिक आदि का समावेश किया गया है।
- इस पुस्तक में विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए अध्यायवार बहुविकल्पी प्रश्न दिए गए हैं।
- इस पुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी कम समय में अधिक तैयारी कर सकता है।

**Nidhi Ma'am**

avyaan PUBLICATIONS
सामान्य हिन्दी
Class Notes
Nidhi Ma'am
avyaan

# क्लास नोट्स-3

# सामान्य हिन्दी

लेखिका - निधि तोमर
एम. ए. एवं नेट

# अध्याय सूची

अध्याय

अलंकार एवं अलंकार के प्रकार

रस एवं रस के प्रकार

छन्द एवं छन्द के प्रकार

हिन्दी साहित्य

- साहित्य की विधाएँ
- हिन्दी साहित्य का काल
- रचनाकार का जीवन-परिचय एवं रचनाएँ
- अन्य रचनाएँ
- पुरस्कार

गद्यांश एवं पद्यांश

# १ अलंकार एवं उसके प्रकार

**शब्दालंकार:** जिस अलंकार में शब्दों के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे शब्दालंकार कहते है। जैसे- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि।

**अनुप्रास अलंकार:-**

**जैसे- 1. जय जय भारत भूमि भवानी, अमरों ने भी तेरी महिमा बारम्बार बखानी।**

**अनुप्रास अलंकार के 5 भेद हैं-**

**छेकानुप्रास** | **वृत्यानुप्रास** | **लाटानुप्रास** | **अन्त्यानुप्रास** | **श्रुत्यानुप्रास**

**( क ) छेकानुप्रास अलंकार:-**

**उदाहरण-** 1. **सूर समर करनी करहिं।**

2. **चारू चंद की चंचल किरणें, खेल रहीं हैं जल थल पर।**

(ख) वृत्यानुप्रास अलंकार:-

उदाहरण- 1. चामर-सी, चन्दन-सी, चंद-सी,
चाँदनी चमेली चारू चंद-सुघर है।

2. भूरी-भूरी भेदभाव भूमि से भगा दिया।

3. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

(ग) लाटानुप्रास अलंकार:-

उदाहरण- 1. राम भजन जो करत नहिं, भव-बंधन भय ताहि।
राम भजन जो करत, नहिं भव-बंधन भय ताहि।

2. पूत सपूत तो, काहे धन संचय।
पूत कपूत तो, काहे धन संचय।

(घ) अन्त्यानुप्रास अलंकार:-

उदाहरण- 1. प्रभु जी तुम दीपक हम बाती।
जाकी जोति बरे दिन राती॥

2. बस मौन में गम्भीरता है, है बड़प्पन वेश में।
जो बात और कहीं नहीं, वह है हमारे देश में॥

(ड) श्रुत्यानुप्रास अलंकारः-

उदाहरण- 1. दिनांत था, थे दीननाथ डुबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।

2. ता दिन दान दीन्ह धन धरनी।

श्लेष अलंकारः-

उदाहरण- 1. पानी गये ना उबरै, मोती मनुष चून॥

2. जो रहीम गति दीपक की, कुल कपूत की सोय।
बारे उजियारे करे, बड़े अंधेरो होय।

3. सुबरन को खोजत फिरे, कवि व्यभिचारी चोर।

**यमक अलंकारः-**

**उदाहरण-**

1. **कनक-कनक से सौ गुनी, मादकता अधिकाय।**
   **वा खाये बौराय जग, या पाये बौराय॥**

2. **तौ पर वारौ उरबसी, सुन राधिके सुजान।**
   **तू मोहन के उरबसी, हवैं उरबसी समान।**

3. **माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर।**
   **कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।**

**वक्रोक्ति अलंकार-**

वक्रोक्ति अलंकार दो प्रकार का होता है- काकु वक्रोक्ति और श्लेष वक्रोक्ति।

**काकु वक्रोक्ति अलंकार-**

**श्लेष वक्रोक्ति अलंकार-**

**वक्रोक्ति अलंकार के उदाहरण-**

**उदाहरण-** 1. **को तुम हो इत आये कहाँ, घनश्याम हो तो कितहुं बरसो।**
**चितचोर कहावत हैं हम तो तहाँ जाओ जहाँ धन है सरसो।**

2. **कौन द्वार पर? हरि मैं राधे,**
**क्या वानर का काम यहाँ ?**

3. **भिक्षुक गो कित को गिरजे,**
**सो तो मांगन को बलि द्वार गयो री।**

**अर्थालंकार:** जब किसी काव्य में उसके अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है, इसके अंतर्गत आने वाले अलंकार को अर्थालंकार कहते हैं।

**उपमेय** -

**उपमान** -

**उदाहरण-**

**उपमा अलंकार:-**

**पहचान-**

**उदाहरण-** 1 **सागर <u>सा</u> गंभीर हृदय हो, गिरी <u>सा</u> ऊंच हो जिसका मन।**

2 **राधा बदन चंद्र <u>सो</u> सुंदर।**

3. **उषा सुनहले तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-<u>सी</u> उदित हुई।**

**उपमा अलंकार के मुख्य अंग**

| **उपमेय** | **उपमान** | **समान धर्म** | **वाचक शब्द** |
|---|---|---|---|
| मुख्य वस्तु | जिससे तुलना हो। | वह गुण जो दोनों में है। | जिस शब्द से उपमा का बोध हो। |

**जैसे-**

उपमा अलंकार दो प्रकार का होता है- पूर्णोपमा एवं लुप्तोपमा।

(1) **पूर्णोपमा**- जिसमें चारों अंग उपस्थित हो।

**जैसे- पीपर पात सरिस मन डोला।**

(2) **लुप्तोपमा**- जिसमें कोई एक अंग लुप्त हो।

**जैसे- पड़ी थी बिजली-सी विकराल।**

रूपक अलंकार :-

उदाहरण- 1. पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।

2. चरण-कमल बन्दौ हरि राई।

3. मैया मै तो चन्द्र-खिलौना लैहों।

4. दु:ख है जीवन-तरु के फूल।

उत्प्रेक्षा अलंकार:-

पहचान-

उदाहरण- 1. सोहत ओढ़े पीत-पट, श्याम सलौने गात।
मानो नीलमणि सैल पर, आतप पर्यो प्रभात।।

2. पाहुन ज्यों आये हो गाँव में शहर के।
मेघ आये बढ़े बन-ठन के, संवर के।।

3. उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा।
मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।।

अतिशयोक्ति अलंकार :-

उदाहरण- 1. हनुमान की पूँछ में लगन ना पाई आग।
सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भाग॥

2. आगे नदियाँ पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार ।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।

3. इतना रोया था मैं उस दिन, ताल-तलैया सब भर डाले।

भ्रांतिमान अलंकार :-

उदाहरण-1. किंशुक कुसुम जानकर झपटा, भौरा शुक की लाल चोंच पर।
तोते ने भी चोंच चलाई, जामुन का फल उसे समझ कर॥

2. पायँ महावर दैन को, नाइन बैठी आय।
फिरि-फिरि जानि महावरी, ऐंड़ी मींड़ति जाय॥

सन्देह अलंकार :-

उदाहरण-1. सारी बीच नारी है कि, नारी बीच सारी है।
सारी ही कि नारी है कि, नारी ही की सारी है।

2. हरि-मुख यह आली! कि, कैधौ उगो मयंक।

3. भूखे नर को भूलकर, हर को देते भोग।
पाप हुआ या पुण्य यह? करू हर्ष या सोग।

विरोधाभास अलंकार :-

उदाहरण-1. या अनुरागी चित्त की गति समझें नहीं कोइ।
ज्यों-ज्यों बूडै श्याम रंग त्यों-त्यों उज्जवल होइ॥

2. शीतल ज्वाला जलती है, ईधन होता दृग जल का।
यह व्यर्थ साँस चल-चल कर, करती है काम अनल का॥

3. विषमय यह गोदावरी, अमृतन को फल देत।

मानवीकरण अलंकार :-

उदाहरण- 1. फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।

2. सागर के उर पर नाच-नाच, करती हैं लहरें मधुर गान।

3. उषा सुनहले तीर बरसाती, जयलक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित काल रात्रि भी, जल में अन्तर्निहित हुई॥

असंगति अलंकार :-

उदाहरण- 1. हृदय घाव मेरे, पीर रघुवीरे।

2. दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति।

उल्लेख अलंकार :-

उदाहरण- 1. तू रूप है किरण में, सौंदर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।

2. तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो॥

व्यतिरेक अलंकार-

उदाहरण- 1. का सरवरि तेहिं देउं मयंकू, चाँद कलंकी वह निकलंकु ।

2. जिनके यश प्रताप के आगे, शशी मलिन रवि शीतल लागे।

3. सिय मुख समता किमि करै चन्द्र वापुरो रंक।

दृष्टान्त अलंकार-

उदाहरण- 1. एक म्यान में दो तलवारें कभी नहीं रह सकती हैं।
किसी और पर प्रेम नारीयाँ, पति का क्या सह सकती हैं।।

2. करत-करत अभ्यास के, जड़ मति होत सुजान।
रसरि आवत जात ते, सिल पर परत निशान।।

विभावना अलंकार-

पहचान-

उदाहरण- 1. बिनु पग चलै सुने बिनु काना,
कर बिनु कर्म करे विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी,
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

2. निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटि छबाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल होत सुभाय॥

अन्योक्ति अलंकार :-

उदाहरण- 1. नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अलि कली ही सौं बिध्यौं, आगे कौन हवाल॥

2. माली आवत देख के कलियाँ करें पुकार।
फूले-फूले चुन लिये, काल हमारी बार॥

अपह्नुति अलंकार-

उदाहरण- 1. है गरजते घन नहीं बजते नगाड़े।
२. यह मुख नहीं है, चंद्रमा है।

**प्रतीप अलंकार–**

**उदाहरण– १. चंद्रमा मुख के समान सुंदर है।**

**२. जग प्रकाश तब जस करे, वृथा भानु यह देख।**

**संकर अलंकार–**

जहाँ एक ही स्थान पर एक से अधिक अलंकार नीरक्षीरवत मिले हुए हों, वहाँ संकर अलंकार होता है।

**संसृष्टि अलंकार–**

जहाँ दो अथवा दो से अधिक अलंकार परस्पर मिलकर भी अलग-अलग स्पष्ट रहें, वहाँ संसृष्टि अलंकार होता है।

# २ रस एवं रस के प्रकार

रस का शाब्दिक अर्थ है '**आनन्द**'। अर्थात "किसी काव्य को पढ़ते या सुनते या देखते समय जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे **रस** कहते हैं।"

- सर्वप्रथम भरत मुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में रस का उल्लेख किया है। भरत मुनि के अनुसार रस की संख्या 8 होती है। भरत मुनि ने 'स्थायी भाव' का उल्लेख नहीं किया है।
- रस को "काव्य की आत्मा" या "काव्य का प्राण तत्व" माना जाता है।

**रस के अवयव**

**स्थायी भाव**- हमारे हृदय में सदा, सर्वदा से विराजमान रहने वाले भाव, जिनसे हम अपनी भावनाएँ प्रकट करने में समर्थ होते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 9 मानी गई है-

**विभाव**- विभाव का अर्थ होता है कारण, जिन कारणों से स्थायी भाव जाग्रत हो, उन्हें विभाव कहते हैं।

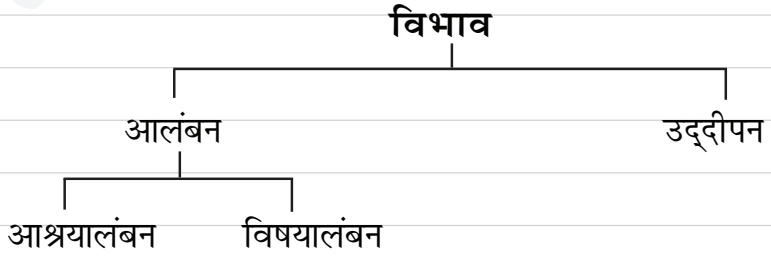

**आश्रयालंबन**–

**विषयालंबन**–

**उद्दीपन**–

**अनुभाव**– आश्रय की चेष्ठाएँ अनुभाव के अन्तर्गत आती हैं, अर्थात् आश्रय की वे क्रियाएँ जिनसे पता चलता है कि हृदय में कौन-सा का भाव जगा है, अनुभाव कहलाता है।

जैसे– शर्म से आँखें झुकना / आँखों से अश्रुधारा बहना, गुस्से से मुँह लाल होना, वमन करना, मुस्कुराना आदि।

अनुभाव के चार भेद होते हैं–

प्र.– बुझत श्याम कौन तू गौरी।
कहाँ रहति काकी है बेटी, देखी नहीं कबहु ब्रज खोरी।
उपर्युक्त पंक्तियों में 'श्याम का गौरी से पूछताछ करना' कौन-सा अनुभाव है?
(a) कायिक (b) वाचिक
(c) आहार्य (d) सात्विक

**संचारी/ व्यभिचारी भाव**- मन में संचरण करने वाले (आने जाने वाले भाव) भाव, जो स्थायी भाव की पुष्टी करते हैं, उन्हें संचारी भाव कहते हैं। इनकी कुल संख्या 33 मानी गई हैं। ये निम्न प्रकार हैं-

| | | |
|---|---|---|
| हर्ष, | विषाद, | त्रास, |
| लज्जा, | ग्लानि, | चिंता, |
| शंका, | असूया, | अमर्ष , |
| मोह, | गर्व, | उत्सुकता, |
| उग्रता, | चपलता, | दीनता, |
| जड़ता, | आवेग, | निर्वेद, |
| धृति, | मति, | बिबोध, |
| वितर्क, | श्रम, | आलस्य, |
| निद्रा, | स्वप्न, | स्मृति, |
| मद, | उन्माद, | अवहित्था, |
| अपस्मार, | व्याधि, | मरण। |

## रस के प्रकार

1शृंगार रस (क) संयोगशृंगार रस (ख) वियोगशृंगार रस

| | |
|---|---|
| 2 करूण रस | 3 हास्य रस |
| 4 रौद्र रस | 5 वीर रस |
| 6 विभत्स रस | 7 भयानक रस |
| 8 अद्भुत रस | 9 शांत रस |
| 10 भक्ति रस | 11 वात्सल्य रस |

## 1. शृंगार रस-

किसी काव्य में नायक तथा नायिका के प्रेम मिलाप तथा विरह का वर्णन किया जाता है, वहां शृंगार रस होता है, इसका स्थाई भाव **रति** होता है। इस रस को "रसराज" या "रसों का राजा" भी कहा जाता है। इसके दो भेद हैं-

**(क) संयोग शृंगार रस-**

**स्थायी भाव**- रति।

**आश्रयालंबन**- जिसके मन में रति का भाव जगा है- नायक/ नायिका/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।

**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में भाव जगा है।

**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण स्थायी भाव जगा है- चाँदनी रात, गायन-वादन, वर्षा, एकांत स्थल आदि।

**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- शर्म से आँखों का झुकना, मुस्कुराना आदि।

**संचारी भाव**- हर्ष, जिज्ञासा, उत्सुकता, लज्जा आदि।

**उदाहरण-1.** बुझत श्याम कौन तू गौरी,
कहां रहति काकी है बेटी, देखी नहीं कबहु ब्रज खोरी।
काहे कों हम ब्रजतन आवतिं, खेलति रहहिं आपनी पौरी।
सुनत रहति श्रवनिन नन्द ढोटा, करत फिरत माखन दधि चोरी।
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहें, खेलन चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातिन भुरइ राधिका भोरी।।

**2.** कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भवन में करत हैं, नैयन ही सब बात।।

3. बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हँसे देन कहै नटि जाय।।

**(ख) वियोग शृंगार रस-**

**स्थायी भाव**- रति।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में वियोग का भाव जगा है- नायक/ नायिका।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में भाव जगा है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण स्थायी भाव जगा है- उदास गायन-वादन, वर्षा, एकांत स्थल आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- आँखों से आँसू का गिरना, आह भरना आदि।
**संचारी भाव**- विषाद, चिन्ता, नाराजगी, स्मृति आदि।

उदाहरण-1. **ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।**
**हंससुता की सुन्दर कगरी और द्रुमन की छाँही।**

3. **निशि-दिन बरसत नैन हमारे।**
**सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जबते स्याम सिधारे।**

2. **उधौ, मन ना ही दस बीस।**
**एक हुतो सो गयो श्याम संग को अराधे ईश।**

## 2. करुण रस

**स्थायी भाव**- शोक।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में शोक का भाव जगा है।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में शोक जगा है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण स्थायी भाव जगा है- किसी की मृत्यु, दुर्घटना, गरीबी आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- रोना, चीखना, चिल्लाना, छाती पीटना आदि।
**संचारी भाव**- विषाद, त्रास, चिंता, जड़ता, दीनता आदि।

**उदाहरण-1. हुआ न यह भी भाग्य अभागा,**
**किस पर विकल गर्व अब जागा।**
**जिसने अपनाया था, त्यागा;**
**रहे स्मरण ही आते,**
**सखी वे मुझसे कहकर जाते।**

**2. देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकैं करुनानिधि रोये।**
**पानी परात को छुयो नहिं, नैनन के जल सौ पग धोये॥**

**3. प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?**
**दुःख जल निधि डूबी का सहारा कहाँ है?**

## 3. हास्य रस

**स्थायी भाव**- हास।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में हास का भाव जगा है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में हास का भाव जगा है।(जोकर आदि)
**उद्दीपन**- हँसाने वाले के हाव-भाव अथवा वे परिस्थितियाँ जिनके कारण स्थायी भाव जगा है,
**अनुभाव**- आश्रय की हास्य चेष्टाएँ- ठहाका लगाना आदि।
**संचारी भाव**- हर्ष, उत्सुकता, चपलता, चंचलता आदि।

उदाहरण-1. **विंध्य के वासी उदासी, तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।**
**गौतम तीय तरी तुलसी सो, कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।**
**ह्वै है सिला सब चंद्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे।**
**कीन्हीं भली रघुनायक जू, जो कृपा करि कानन को पगु धारे॥**

2. **काहू न लखा सो चरित बिसेखा, जो सरूप नृप कन्या देखा।**
**मर्कट बदन भयंकर देही, देखत हृदय क्रोध भा ते ही।**
**जेहि दिसि नारद बैठे फूली, सो दिसि तेहि न विलोकी भूली।**
**पुनि-पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं, देखि दसा हर जन मुसकाहीं॥**

3. **तंबूरा ले मंच पर बैठे प्रेम प्रताप ।**
**साज मिले 15 मिनट घंटा भर आलाप ॥**
**घंटा भर आलाप, राग में मारा गोता ।**
**धीरे-धीरे खिसक लिये थे सारे श्रोता ॥**

## 4. रौद्र रस

**स्थायी भाव**- क्रोध।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में क्रोध का भाव जगा है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में क्रोध का भाव जगा है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण क्रोध का भाव जगा है- अपमान सहना, कटु वचन आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- आँखों का गुस्से से लाल होना, गुस्से में कापना आदि।
**संचारी भाव**- अमर्ष, उग्रता, आवेग आदि।

उदाहरण-

1. **उस काल मारे क्रोध के तन कांपने उसका लगा।**
   **मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा॥**

2. **हरि ने भीषण हूँकार किया, अपना स्वरूप विस्तार किया,**
   **डगमग डगमग दिग्गज डोले, भगवान कुपित हो कर बोले।**
   **जंजीर बढ़ा अब साध मुझे, हाँ हाँ दुर्योधन बाँध मुझे॥**

3. **श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्षोभ से जलने लगे।**
   **सब शील अपना भूल कर करतल युगल मलने लगे॥**
   **संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।**
   **करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठ कर खड़े॥**

## 5. भयानक रस

**स्थायी भाव**- भय।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में भय उत्पन्न हुआ है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में भय उत्पन्न हुआ है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ जिनके कारण भय पैदा हो- बाढ़, तुफान, सुनामी आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- चीखना-चिल्लाना, भय से काँपना, बेहोश हो जाना आदि।
**संचारी भाव**- त्रास, चिन्ता, आशंका, जड़ता, डर आदि।

**उदाहरण-1. उधर गजरती सिंधु लहरिया, कुटिल काल के जालो सी।**
**चली आ रही फैन उगलती, फन फैलाये व्यालों सी॥**

**2. एक और अजगरहि लखी एक और मृगराय।**
**बिकल बटोही बीच ही पर्यो मूरछा खाए॥**

**3. धँसती धरा धधकती ज्वाला, ज्वाला-मुखियों के निस्वास।**
**और संकुचित क्रमश: उसके, अवयव का होता था ह्रास।**

**4. लंका की सेना कपि के गर्जन रव से काँप गई।**
**हनुमान के भीषण दर्शन से ही विनाश भाँप गई॥**

## 6 वीभत्स रस

**स्थायी भाव**- जुगुप्सा (घृणा)।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में घृणा उत्पन्न हुई है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसके कारण मन में घृणा उत्पन्न हुई है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण घृणा उत्पन्न हुई है- लाश का सड़ना, जख्म का रिसना, बदबू आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- चीखना, वमन करना, नाक-मुँह सिकोड़ना, थूकना आदि।
**संचारी भाव**- ग्लानि, विषाद, जड़ता आदि।

**उदाहरण-1. सिर पर बैठ्यो काग आँख दोउ खात निकारत।**
**खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनंद उर धारत॥**
**गीध जांघि की खोदि-खोदि कै मांस उपारत।**
**स्वान आंगुरिन को काटि-काटि कै खात विदारत॥**

**2. जहँ-तहँ मज्जा माँस रचिर लखि परत बगारे।**
**जित-जित छिटके हाड़, सेत कहुँ, कहुँ रतनारे॥**

**3. आँखे निकाल उड़ जाते, क्षण भर उड़ कर आ जाते।**
**शव जीभ खींचकर कौवे, चुभला-चुभला कर खाते।**
**भोजन में श्वान लगे, मुरदे थे भू पर लेटे,**
**खा माँस चाट लेते थे, चटनी सम बहते-बहते बेटे।**

# 7. वीर रस

**स्थायी भाव**- उत्साह।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में उत्साह उत्पन्न हुआ है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसे देखकर उत्साह उत्पन्न हुआ है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण उत्साह उत्पन्न हुआ है- रणभेरी का बजना, शत्रु की ललकार, जय-जयकार आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- हुँकार भरना, दहाड़ मारना आदि।
**संचारी भाव**- हर्ष, गर्व, उत्सुकता, उग्रता, आवेग आदि।

**उदाहरण-1. झाला को राणा जान मुगल, फिर टूट पड़े थे झाला पर।**
**मिट गया वीर जैसे मिटता, परवाना दीपक ज्वाला पर॥**

**2. वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो।**
**सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो।**

**3. निसिचर हीन करहुँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह।**
**सकल मुनिन्ह के आश्रमन, जाइ जाइ सुख दीन्ह॥**

**4. मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे।**
**यमराज से भी युद्ध में, प्रस्तुत सदा जानो मुझे॥**

**5. मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक।**
**मातृ-भूमि पर शीश चढ़ावे, जिस पथ जावें वीर अनेक॥**

## 8. अद्‌भुत रस

**स्थायी भाव**- विस्मय।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में आश्चर्य उत्पन्न हुआ है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसे देखकर आश्चर्य उत्पन्न हुआ है।
**उद्‌दीपन**- वे परिस्थितियाँ जिनके कारण आश्चर्य उत्पन्न हुआ है- वस्तु की विचित्रता, घटना की नवीनता आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- अचरज भरी नजरों से देखना, मुँह फाड़ना आदि।
**संचारी भाव**- हर्ष, गर्व, उत्सुकता, जिज्ञासा, जड़ता आदि।

उदाहरण-1. **राग है कि, रूप है कि, रस है कि, जस है कि।**
**तन है कि, मन है कि, प्राण है कि, प्यारी है॥**

2. **केशव कहि न जाइ का कहिये।**
**देखत तब रचना विचित्र, अति समुझि मनहिं मन रहिये॥**

3. **यह देख गगन मुझमें लय है, यह देख पवन मुझमें लय है।**
**मुझमें विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल॥**

4. **देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया।**
**क्षणभर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया॥**

5. **बिनु पग चलै सुने बिनु काना, कर बिनु कर्म करे विधि नाना।**
**आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी॥**

## 9. शांत रस

**स्थायी भाव**- निर्वेद।
**आश्रयालंबन**- जिसके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ है/ कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसे देखकर वैराग्य उत्पन्न हुआ है।
**उद्दीपन**- ईश्वरीय ज्ञान, सन्त वचन, प्राकृति-सौन्दर्य आदि।
**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- संसार की भौतिक वस्तुओं का त्याग, आँखें बन्द करना, प्राकृति-सौन्दर्य में खो जाना आदि।
**संचारी भाव**- ग्लानि, धृति, क्षमा आदि।

**उदाहरण-1. उठते - गिरते,**
**जीवन-पथ पर चलते-चलते,**
**पथिक पहुँच कर,**
**इस जीवन के चौराहे पर ।**
**क्षण भर रूक कर,**
**सूनी दृष्टि डाल सम्मुख जब पीछे अपने नयन घुमाता ।**
**जीवन वहाँ खत्म हो जाता ।**

**2. देखी मैंने आज जरा,**
**हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा।**

**3. 'प्रकृति के यौवन का शृंगार करेंगे कभी न बासी फूल।**
**मिलेंगे वे जाकर अति शीघ्र, आह! उत्सुक है उनकी धूल।'**

# 10. भक्ति रस

**स्थायी भाव**- ईश विषयक रति।

**आश्रयालंबन**- भक्त / कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।

**विषयालंबन**- वह व्यक्ति जिसे देखकर या सुनकर भक्ति उत्पन्न हुई है।

**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ या वस्तुएँ जिनके कारण भक्ति उत्पन्न हुई है- ईश्वरीय ज्ञान, सन्तों के वचन, मन्दिर, मूर्ति आदि।

**अनुभाव**- आश्रय की चेष्टाएँ- ध्यान लगाना, आँखें बन्द करना, माला जपना, भक्ति के भजन गाना आदि।

**संचारी भाव**- दीनता, धृति, क्षमा, दया आदि।

**उदाहरण-1. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।**
**जैसे उड़ि जहाज कौ पक्षी पुनि जहाज पै आवै।**
**कमलनैन को छांड़ि महातम, और देव को ध्यावै॥**
**परमगंग को छांड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावै॥**
**सूरदास प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै॥**

**2. पायो जी मैंने राम-रत्न धन पायो।**
**वस्तु अमूल्य दी मेरे सद्गुरु, कृपा कर अपनायो।**

**4. तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमें रही न हूँ।**
**बारी फेरी बलि गई, जित देखाँ तित तूँ॥**

# 11. वात्सल्य रस

**स्थायी भाव**- संतान विषयक रति।
**आश्रयालंबन**- माता-पिता / कवि/ श्रोता/ पाठक/ दर्शक।
**विषयालंबन**- बालक, जिसे देखकर या सुनकर मन में ममता उत्पन्न हुई है।
**उद्दीपन**- वे परिस्थितियाँ, जिसे देखकर या सुनकर मन में ममता उत्पन्न हुई है- बालक का घुटमन चलना, तुतलाकर बोलना, बाल लीलाएँ आदि।
**अनुभाव**- बच्चे को गोद में लेना, दुलार करना, उसके जैसी बोली बोलना आदि।
**संचारी भाव**- हर्ष, मोह, गर्व, उत्सुकता, चपलता, जिज्ञासा आदि।

वात्सल्य रस के दो उपभेद हैं- संयोग वात्सल्य एवं वियोग वात्सल्य।
1. **संयोग वात्सल्य**-

उदाहरण-1. **शोभित कर नवनीत लिए,**
**घुटरुनि चलत रेनु तन मण्डित, मुख दधि लेप किए।**

2. **मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।**
**कितक बार मोहिं दूध पियत भइ, यह अजहूँ है छोटी।**

3. **जसोदा हरि पालनें झुलावै।**
**हलरावै दुलरावै, मल्हावै जोइ सोई, कछु गावै।**

2. वियोग वात्सल्य-

उदाहरण-1. सन्देशो देवकी सों कहियो,
हौं तो धाय तिहारे सुत की दया करत ही रहियो॥
तुमतौ टेव जानितिहि हो तऊ मोहि कहि आवै।
प्रात उठत मेरे लाल लड़ैतेहिं माखन रोटी भावै॥

by Nidhi Ma'am

# ३ छन्द एवं उसके प्रकार

- छंद शास्त्र के आदि प्रणेता पिंगल नाम के ऋषि थे, इन्ही के नाम पर छन्द का दूसरा नाम **पिंगल** भी है।
- छंद का सर्वप्रथम उल्लेख **ऋग्वेद** में मिलता है।
- छंद शास्त्र को पद्य का **'व्याकरण'** भी कहा जाता है।

## छंद की परिभाषा

**प्रकृति के अनुसार छंद के तीन प्रकार होते हैं-**

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द 3. मुक्तक छन्द

**1. मात्रिक छन्द-**

**2. वर्णिक छन्द-**

**3. मुक्तक छन्द-**

## छन्द के अंग ( अवयव )

छन्द के अंग निम्नलिखित हैं-

1. चरण / पद / पाद 2. वर्ण और मात्रा 3. संख्या और क्रम
4. गति 5. यति/विराम 6. तुक 7. गण

by Nidhi Ma'am

1. **चरण/पद/पाद**- छंद के प्रायः चार भाग होते हैं, इनमें से प्रत्येक भाग को चरण कहते हैं। कुछ छंदों में चरण तो चार होते हैं, लेकिन वे लिखे दो ही पंक्तियों में जाते हैं, जैसे- दोहा, सोरठा आदि। हिन्दी में कुछ छंद छः पंक्तियों में लिखे जाते है, ऐसे छंद दो छंदों के योग से बनते हैं, जैसे- कुण्डलिया, छप्पय आदि।

**चरण दो प्रकार के हाते हैं**- सम चरण और विषम चरण।

**विषम चरण**- छंद के प्रथम व तृतीय चरण को **विषम चरण** कहते हैं।

**सम चरण**- छंद के द्वितीय व चतुर्थ चरण को **सम चरण** कहते हैं।

2. **वर्ण और मात्रा**- पूर्ण व्यंजन (स्वर के साथ) को **वर्ण** तथा स्वरों की मात्राओं को ही छन्द की **मात्रा** कहते हैं। ह्रस्व स्वर की मात्रा को **लघु मात्रा** तथा दीर्घ स्वर की मात्रा को **गुरु मात्रा** कहा जाता है।

**लघु मात्रा**- लघु मात्रा के लिए प्रयुक्त चिह्न एक पाई रेखा (।) होती है-

**गुरु मात्रा**- गुरु मात्रा के लिए प्रयुक्त चिह्न एक वर्तुल रेखा (ऽ) है-

3. **संख्या और क्रम**- वर्णों और मात्राओं की गणना को **संख्या** कहते हैं। लघु मात्रा की संख्या एक तथा दीर्घ मात्रा की संख्या दो होती है। लघु-गुरु के स्थान निर्धारण को **क्रम** कहते हैं।

4. **गति**- छंद के पढ़ने के प्रवाह या लय को गति कहते हैं।

5. **यति/विराम**- छंद में नियमित वर्ण या मात्रा पर सांस लेने के लिए रूकना पड़ता है, इसी रूकने के स्थान को यति या विराम कहते हैं।

6. **तुक**- छन्द के चरणान्त की अक्षर मैत्री को तुक कहते हैं।

7. **गण**- गण का अर्थ है समूह। यह समूह तीन वर्णों का होता है। गण में 3 ही वर्ण होते हैं, न अधिक न कम। अतः गण की परिभाषा होती है, लघु-गुरु के नियत क्रम से 3 वर्णों के समूह को गण कहा जाता है।

गणों की संख्या 8 है- यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण।

गणों को याद रखने के लिए सूत्र - **यमाताराजभानसलगा**

| **गण का नाम** | **उदाहरण** | **चिह्न** |
|---|---|---|
| यगण | यमाता | ।ऽऽ |
| मगण | मातारा | ऽऽऽ |
| तगण | ताराज | ऽऽ। |
| रगण | राजभा | ऽ।ऽ |
| जगण | जभान | ।ऽ। |
| भगण | भानस | ऽ।। |
| नगण | नसल | ।।। |
| सगण | सलगा | ।।ऽ |

**कुछ प्रमुख छन्द इस प्रकार हैं-**

## मात्रिक छन्द

**मात्रिक छन्द 3 प्रकार के होते हैं-**

**सममात्रिक छन्द**- जिस छन्द की सभी मात्राएँ समान होती हैं, उसे सममात्रिक छन्द कहते हैं।

**विषम मात्रिक छन्द**- जिस छंद की सभी मात्राएँ समान नहीं होती हैं, उसे विषम मात्रिक छंद कहते हैं।

**अर्द्ध सममात्रिक छन्द**- जिस छंद की आधी मात्राएँ समान होती हैं, उसे अर्द्ध सममात्रिक छंद कहते हैं।

1. दोहा-

उदाहरण- 1. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून॥

2. श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि॥

2. चौपाई-

उदाहरण- 1. सुखी मीन जे नीर अगाधा, जिमि हरिशरण न एकउ बाधा।
मीन विलग जल से जब होती, तड़त-तड़प निज जीवन खोती॥

2. सुनु सिय सत्य असीस हमारी, पुजहि मन कामना तुम्हारी।

3. बिनु पग चलै सुने बिनु काना, कर बिनु कर्म करे विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी॥

3. सोरठा–

उदाहरण– 1. इस भव सागर बीच, जीवन बुलबूला क्षणिक।
कर्म न कर तू नीच, मानव नित सत्संग कर॥

2. मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल्, द्रवहु सकल कलिमल दहन॥

4. रोला–

उदाहरण– बाहर आया माल, सेठ ने जोथा चाँपा ।
बंद जेल में हुए, दवा बिन मिटा मुटा पा ॥

5. कुण्डलिया–

**उदाहरण**– 1. **रत्नाकर** सबके लिए, होता एक समान।
बुद्धिमान मोती चुने, सीप चुने नादान।
सीप चुने नादान, अज्ञ मूंगे पर मरता।
जिसकी जैसी चाह, इकठ्ठा वैसा करता।
ठकुरेला कविराय, सभी खुश इच्छित पाकर।
हैं मनुष्य के भेद, एक सा है **रत्नाकर**।

2. **पॉक्टि में** पीड़ा भरी, कौन सुने फरियाद।
ये मँहगाई देखकर, वे दिन आते याद।
वे दिन आते याद, जेब में पैसा रखकर।
सौदा लाते थे, बाजार से थैला भरकर।
फिर पलटा मारा, युग ने मुद्रा की क्रेडिट में।
थैले में हैं पैसे, और सौदा है **पॉक्टि में।**

**6. हरिगीतिका**– यह एक सममात्रिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। अंत में एक लघु-गुरु (।ऽ) होता है।

ऽऽ। ऽ ।।ऽ ।ऽ ऽ ऽ।ऽ ऽ।। ।ऽ
**उदाहरण**– संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो।
चलते हुए निज इष्ट पथ में संकटों से मत डरो।
जीते हुए भी मृतक सम रहकर न केवल दिन भरो।
वर वीर बनकर आप अपनी विघ्न बाधाएँ हरो।

**7. गीतिका**– यह एक सममात्रिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती हैं। एवं 12 मात्रा पर यति होती है, अंत में लघु-गुरु (।ऽ) आवश्यक

ऽ। ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ऽ। ऽ ।।ऽ ।ऽ

है।

**उदाहरण**– मातृ भू सी मातृ भू है, अन्य से तुलना नहीं।

**8. बरवै**– यह एक अर्द्ध सममात्रिक छन्द है, इसके विषम चरणों में 12 और सम चरणों में 7 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में यति होती है, सम चरणों के अंत में जगण (।ऽ।) या तगण (ऽऽ।) होने से बरवै की मिठास बढ़ जाती है।

ऽ। ऽ। ।। ऽ।। ।ऽ।ऽ।

**उदाहरण**– वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।
सरद सुवारिद में जनु, तड़ित बिहार।।

**9. वीर छंद**– यह एक सममात्रिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 16 और 15 मात्राएँ होती हैं। अंत में एक गुरु-लघु (ऽ।) होता है।

।। ऽ ।। ।।ऽ। ऽ।ऽ ऽऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ।

**उदाहरण**– कर में गह करवाल घूमती, रानी बनी शक्ति साकार।
सिंहवाहिनी शत्रुघातीनी, सी करती थी अरि-संहार।

**10. शृंगार**– इसमें प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं, और 16 मात्राओं पर यति होती है, अंत में एक गुरु और एक लघु आता है।
जैसे– निछावर कर दे हम सर्वस्व।
हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

**11. दिग्पाल**– इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है, और 12-12 मात्राओं पर यति होती है। **जैसे**– हिमाद्रि तुंग-श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।

**12. रूपमाला**– इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं, और 14-10 मात्राओं पर यति होती है, अंत में एक लघु और एक दीर्घ आता है।
**जैसे**– उत्तरा के धन रहो तुम, उत्तरा के पास।

13. **सरसी**- इसके प्रत्येक चरण में 27 मात्राएँ होती है, और 16-11 मात्राओं पर यति होती है।
**जैसे**- नीरव तारागण करते थे, झिलमिल अल्प प्रकाश।

14. **सार**- इस छंद के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं, और 16-12 मात्राओं पर यति होती है।
**जैसे**- सब को मैंने कहते पाया तेरी राम कहानी

15. **लावणी**- इस छंद के प्रत्येक चरण में 30 मात्राएँ होती हैं, और 16-14 मात्राओं पर यति होती है।
**जैसे**- शोक भरे छंदों में मुझसे, कहो न जीवन सपना है।

16. **उल्लाल**- इसके प्रथम और तृतीय चरण में 15-15 मात्राएँ होती हैं, तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।
**जैसे**- हे शरण दायिनि देवी तू, करती सबका त्राण है।
हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी तू प्राण है।

17. **छप्पय छन्द**- इस छंद में 6 पंक्तियाँ होती हैं। पहली चार पंक्तियों में रोला छंद और अंत की दो पंक्तियों में उल्लाला छंद होते हैं। प्रथम चार पंक्तियों में 24 मात्राएँ और बाद की दो पंक्तियों में 26-26 या 28-28 मात्राएँ होती हैं।
**जैसे**- व्यर्थ ना कर अभिमान, एक दिन मिट जाएगा।
राजा हो या रंक न, कोई बच पाएगा।
आया खाली हाथ, हाथ खाली जाएगा।
तजा न जिसने लोभ, 'सलिल' वह पछताएगा।
करते सब ग्रन्थ निषेध हैं, हिंसा लालच क्रोध का।
भव-सागर से तरेगा जब, पथ पकड़ेगा बोध का।

# वर्णिक छन्द

**1. सवैया या मालती**– यह एक सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 22 अक्षरों से लेकर 26 अक्षर तक होते हैं। इसके चारों चरणों में तुक मिलता है।

**उदाहरण**– या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारो।
आठहूँ, सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाय चराय बिसारो।

**2. कवित्त / घनाक्षरी**– इसमें भी प्रत्येक चरण में 31 वर्ण होते हैं। 16 एवं 15 वर्णों पर यति होती है, घनाक्षरी में वर्णों के क्रम का कोई बन्धन नहीं होता है।

**उदाहरण**– इंद्र जिमि जम्भ पर बाडव सुअम्भ पर, रावन सदम्भ पर रघुकुलराज हैं।
पौन बारि बाह पर सम्भु रतिनाह पर, ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज हैं।

**3. द्रुत बिलम्बित**– यह सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। इसमें नगण, भगण, भगण, रगण का क्रम होता है।

**उदाहरण**– न जिसमें कुछ पौरुष हो यहां,
सफलता वह पा सकता कहां?

**4. इन्द्रवज्रा**– यह सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में 2 तगण, 1 जगण और 2 गुरु होते हैं।

**उदाहरण**– होता उन्हें केवल धर्म प्यारा, सत्कर्म ही जीवन का सहारा।

**5. उपेन्द्रवज्रा**– यह एक सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। तथा गणों का क्रम– नगण, तगण, जगण और 2 गुरु होता है।

**उदाहरण**– बिना विचारे जब काम होगा,
कभी न अच्छा परिणाम होगा।

**6. मालिनी**– यह एक सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। 7 और 8 के बाद यति होती है।

**उदाहरण**– पल-पल जिसके मैं पन्थ को देखती थी।
निशिदिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।।

**7. मंदाक्रांता**– यह एक सम वर्णिक छन्द है, इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं। तथा प्रत्येक चरण में 2 भगण, नगण, 2 तगण और 2 गुरु होता है।

**उदाहरण**– कोई पत्ता नवल तरू का पीत जो हो रहा हो।
तो प्यारे के दृग युगल के सामने ला उसे ही।
धीरे-धीरे सम्भल रखना और उन्हें यों बताना।
पीला होना प्रबल दु:ख से प्रेषिता-सा हमारा।।

## मुक्तक छन्द

**मुक्तक छंद**– यह छन्द न तो वर्णिक है न ही मात्रिक, क्योंकि इसमें 'मात्रा' या 'वर्ण' का कोई बंधन नहीं है। यह छन्द के बन्धन से मुक्त होने के कारण 'मुक्तक छन्द' कहलाता है। आज कल 'मुक्तक छन्द' ही ज्यादा चलन में है।

**उदाहरण**– 1. साँप!
तुम सभ्य तो हुए नहीं,
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डसना,
विष कहाँ पाया?

# ४ हिन्दी साहित्य

**काव्य-**

जब किसी घटना या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है, उसे काव्य कहते हैं। काव्य के संग्रह को साहित्य कहा जाता है।

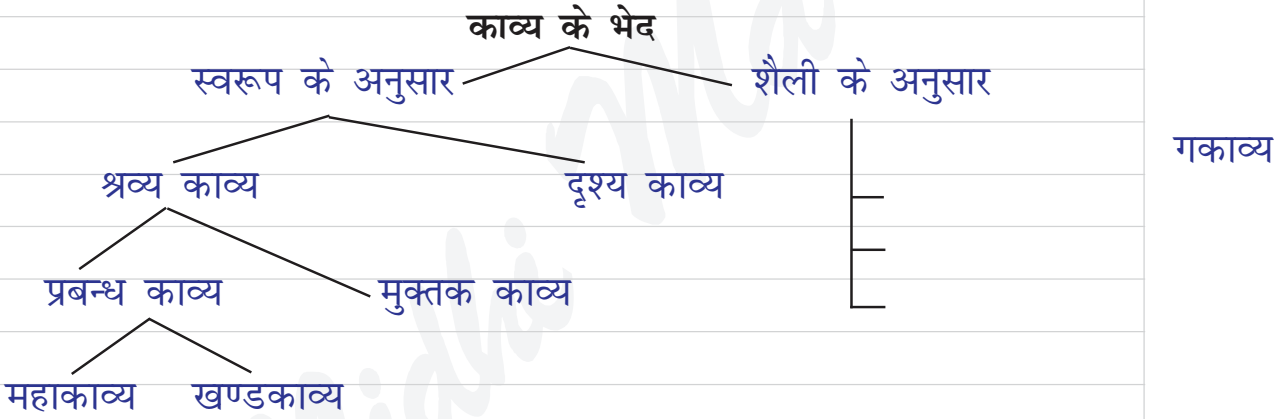


**[ क ] स्वरूप के अनुसार काव्य के भेद-**

**( अ ) श्रव्य काव्य-**

**1. प्रबन्ध काव्य-**

by Nidhi Ma'am

**a-** महाकाव्य-

**b-** खण्डकाव्य-

2. मुक्तक काव्य-

( ब ) दृश्य काव्य-

[ ख ] शैली के अनुसार काव्य के भेद-

( अ ) पद्य काव्य-

by Nidhi Ma'am

(ब) गद्य काव्य-

(स) चंपू काव्य-

by Nidhi Ma'am

by Nidhi Ma'am

# ५ हिन्दी साहित्य के काल

हिन्दी साहित्येतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।

## आदिकाल/वीरगाथा काल (650 ई०-1350 ई०)

- हिन्दी साहित्येतिहास के आरंभिक काल के नामकरण का प्रश्न विवादास्पद है। इस काल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल', मिश्र बंधु ने 'प्रारंभिक काल', महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'बीज वपन काल', शुक्ल ने 'आदिकाल: वीरगाथाकाल', राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध-सामंत काल', राम कुमार वर्मा ने 'संधिकाल' व 'चारण काल', हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'आदिकाल' की संज्ञा दी है।
- आदिकाल में दो शैलियाँ मिलती हैं डिंगल व पिंगल। डिंगल शैली में कर्कश शब्दावलियों का प्रयोग होता है जबकि पिंगल शैली में कर्णप्रिय शब्दावलियों का। कर्कश शब्दावलियों के कारण डिंगल शैली अलोकप्रिय होती चली गई, जबकि कर्णप्रिय शब्दावलियों के कारण पिंगल शैली लोकप्रिय होती चली गई और आगे चलकर इसका ब्रजभाषा में विगलन हो गया।
- आदिकालीन साहित्य के तीन सर्व प्रमुख रूप हैं- सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य एवं रासो साहित्य।
- सिद्धों द्वारा जनभाषा में लिखित साहित्य को 'सिद्ध-साहित्य' कहा जाता है। यह साहित्य बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा का प्रचार करने हेतु रचा गया। सिद्ध कवियों की रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं **'दोहा कोष'** और **'चर्यापद'**। सिद्धाचार्यों द्वारा रचित दोहों का संग्रह 'दोहा कोष' के नाम से तथा उनके द्वारा रचित पद 'चर्या पद' के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- 10 वीं शदी के अन्त में शैव धर्म एक नये रूप में जन्म लिया, जिसे नाथ पंथ या हठयोग कहा गया। नाथ साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ थे।

रासो काव्य को मुख्यत: 3 वर्गों में बाँटा जाता है-

1. **वीरगाथात्मक रासो काव्य :** इस काव्य में राजाओं की वीरता का वर्णन है। जैसे- पृथ्वीराज रासो, हम्मीर रासो, खुमाण रासो, परमाल रासो, विजयपाल रासो।
2. **श्रृंगारपरक रासो काव्य :** इस काव्य में श्रृंगार का वर्णन है। जैसे- बीसल देव रासो, संदेश रासक, मुंज रासो।
3. **धार्मिक व उपदेशमूलक रासो काव्य:** इस काव्य में धार्मिक व उपदेशमूलक काव्य का वर्णन है। जैसे- उपदेश रसायन रास, चन्दनबाला रस, स्थूलिभद्र रास, भरतेश्वर बाहुबलि रास, रेवन्तगिरि रास।

## आदिकालीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | रचना | रचनाकार | रचना |
|---|---|---|---|
| गोरखनाथ | नाथ सबदी, पद, प्राण संकली, सिष्या दासन पंथ के प्रवर्तक | जगनिक | परमाल रासो |
| चंद्रबरदाई | पृथ्वीराज रासो (शुक्ल के अनुसार हिन्दी का **प्रथम महाकाव्य**) | नल्ह सिह भाट | विजयपाल रासो |
| शाङ्गधर | हमीर रासो | नरपति नाल्ड | बीसल देव रासो |
| दलपति विजय | खुमाण रासो | विद्यापति | पदावली (मैथिली में), कीर्तिलता व कीर्तिपताका (अक्हट्ट में), लिखनावली (संस्कृत में) |

# पूर्व मध्य काल/भक्ति काल ( 1350 ई०-1650 ई० )

- भक्ति काल को 'हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल' कहा जाता है।

**भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ हैं-**

- निर्गुण काव्यधारा
  - निर्गुण काव्यधारा की दो शाखाएँ हैं-
    - ज्ञानाश्रयी शाखा/संत काव्य: सन्त काव्य के प्रतिनिधि कवि कबीर हैं।
    - प्रेमाश्रयी शाखा/सूफी काव्य: सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं।
- सगुण काव्यधारा
  - सगुण काव्यधारा की दो शाखाएँ हैं-
    - कृष्ण भक्ति काव्य: कृष्ण भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि सूरदास हैं।
    - राम भक्ति काव्य।: राम भक्ति काव्य के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास हैं।

- 'संत काव्य' का सामान्य अर्थ है संतों के द्वारा रचा गया काव्य। लेकिन जब हिन्दी में 'संत काव्य' कहा जाता है। तो उसका अर्थ होता है निर्गुणोपासक ज्ञानमार्गी कवियों के द्वारा रचा गया काव्य। संत कवि : कबीर, नामदेव, रैदास, नानक, धर्मदास, रज्जब, मलूकदास, दादू, सुंदरदास, चरनदास, सहजोबाई आदि।
- 'प्रेमाख्यानक काव्य' का अर्थ है, निर्गुण उपासक प्रेममार्गी सूफी कवियों के द्वारा रचित प्रेमकथा काव्य। प्रेममार्गी सूफी कवियों में जायसी, नन्द दास, नूर मुहम्मद, उसमान, ईश्वर दास आदि हैं।
- जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'कृष्णाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए। कृष्ण भक्त कवि हैं- बल्लभ, हरिदासी, चैतन्य, राधा बल्लभ

आदि। कृष्ण भक्ति काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास जी हैं।

- जिन भक्त कवियों ने विष्णु के अवतार के रूप में राम की उपासना को अपना लक्ष्य बनाया वे 'रामाश्रयी शाखा' के कवि कहलाए। राम भक्त कवि हैं–रामानंद, अग्रदास, ईश्वर दास, तुलसीदास, नाभादास, केशवदास, नरहरिदास आदि। राम भक्ति काव्य धारा के सबसे बड़े और प्रतिनिधि कवि हैं तुलसी दास।

## पूर्व-मध्यकालीन/भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

### (A) संत काव्य

| रचनाकार | रचना |
|---|---|
| कबीरदास | बीजक (रमैनी, सबद, साखी) |
| रैदास | बानी |
| सुंदर दास | सुंदर विलाप |
| मलूक दास | रत्न खान, ज्ञानबोध |

### (B) सूफी काव्य

| रचनाकार | रचना |
|---|---|
| असाइत | हँसावली |
| मुल्ला दाऊद | चंदायन या लोरकहा |
| कुतबन | मृगावती |
| उसमान | चित्रावती |
| जायसी | पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कन्हावत |
| दामोदर कवि | लखमसेन पद्मावती कथा |
| नंद दास | रूप मंजरी |
| ईश्वर दास | सत्यवती कथा |
| नूर मुहम्मद | इंद्रावती, अनुराग बाँसरी |

### (C) कृष्ण भक्ति काव्य

| रचनाकार | रचना |
|---|---|
| सूरदास | सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी, भ्रमरगीत |
| कुंभन दास | फुटकल पद |
| परममानंद दास | परमानंद सागर |
| मीराबाई | नरसी जी का मायरा, गीत गोविंद टीका, राग गोविंद, राग सोरठ |
| रसखान | प्रेम वाटिका, सुजान रसखान, दानलीला |
| नरोत्तमदास | सुदामा चरित |

### (D) राम भक्ति काव्य

| रचनाकार | रचना |
|---|---|
| रामानन्द | राम आरती |
| तुलसीदास | रामचरित मानस, गीतावली, पार्वती मंगल, कवितावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कृष्ण गीतावली, जानकी मंगल, बरवै रामायण,राम लला नहछु, रामाज्ञा प्रश्नावली, वैराग्य संदीपनी |
| नाभादास | भक्त माल |
| केशव दास | रामचन्द्रिका (प्रबंध काव्य) |

## 'अष्टछाप' के कवि

बल्लभाचार्य के शिष्य- 1. सूरदास 2. कुंभन दास 3. परमानंद दास 4. कृष्ण दास

विट्ठलनाथ के शिष्य- 5. छीत स्वामी 6. गोविंद स्वामी 7. चतुर्भुज दास 8. नंद दास

## उत्तर-मध्यकाल / रीतिकाल ( 1650 ई०-1850 ई० )

- नामकरण की दृष्टि से उत्तर-मध्यकाल विवादास्पद है। इसे रामचन्द्र शुक्ल ने 'रीतिकाल', विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'शृंगार काल' और मिश्र बंधु ने 'अलंकृत काल' कहा है। रीतिकाल के उदय के संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है: 'इसका कारण जनता की रुचि नहीं, आश्रयदाताओं की रुचि थी, जिसके लिए वीरता और कर्मण्यता का जीवन बहुत कम रह गया था। रीतिकालीन कविता में लक्षण ग्रंथ, नायिका भेद, शृंगारिकता आदि की जो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं उसकी परंपरा संस्कृत साहित्य से चली आ रही थी।'
- रीतिकालीन कवियों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है- रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त।

**(i) रीतिबद्ध कवि :** रीतिबद्ध कवियों ने अपने लक्षण ग्रंथों में प्रत्यक्ष रूप से रीति परम्परा का निर्वाह किया है; जैसे- केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, सेनापति, देव, पद्माकर आदि। **आचार्य राचन्द्र शुक्ल ने केशवदास को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा है।**

**(ii) रीतिसिद्ध कवि :** रीतिसिद्ध कवियों की रचनाओं की पृष्ठभूमि में अप्रत्यक्ष रूप से रीति परिपाटी काम कर रही होती है। उनकी रचनाओं को पढ़ने से साफ पता चलता है कि उन्होंने काव्य शास्त्र को पचा रखा है। बिहारी, रसनिधि आदि इस वर्ग में आते हैं।

**(iii) रीतिमुक्त कवि :** रीति परंपरा से मुक्त कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है। घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव आदि इस वर्ग में आते हैं।

## उत्तर-मध्यकालीन/रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

| रचनाकार | रचना | रचनाकार | रचना |
|---|---|---|---|
| भिखारी दास | काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय | घनानन्द | सुजान हित प्रबंध, वियोग बेलि, इश्कलता, प्रीति पावस, पदावली। |
| बिहारी | बिहारी सतसई। | | |
| पद्माकर भट्ट | हिम्मत बहादुर विरुदावली (प्रबंध)। | भूषण | शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दशक। |